गुप्त कलीसिया–7

स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 3

वह बन्दी बनाता है। 2 तीमुथियुस 2:26, "और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं।"

वह धर्मशास्त्र की गलत व्याख्या करता है। प्रभु यीशु की परीक्षा में उसने ऐसा ही किया था– मत्ती 4:6, "और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा हैः 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।'"

वह हमें सच्चे एवं शुद्ध विश्वास से भटकाता है। 2 कुरिन्थियों 11:3, "परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएं।"

1 थिस्सलुनीकियों 3:5, "इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।"

वह मिशन सेवा में बाधा डालता है। प्रेरितों के काम 13:6–10, "वे उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुंचे। वहां उन्हें बार–यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?"

शैतान परमेश्वर की महिमा को कम नहीं कर सकता परन्तु वह पृथ्वी पर मनुष्य को परमेश्वर के महिमान्वन से रोकता है। हम अपने संसाधन अपने ऊपर ही काम में लेते हैं और संसार में अविश्वासियों से दूर रहते हैं। शैतान इससे अति प्रसन्न होता है।

मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अपने जीवन को जांच कर देखें कि आपको परमेश्वर की पुकार हुई और आप किसी न किसी कारणवश उसे न कर पाए। यह शैतान का काम था। मैं आग्रह करता हूं कि आप उन बाधक कारणों को दूर करें। शैतान को बाधक न बनने दें।

आत्मिक युद्ध

हम उद्धार के इतिहास के तीन युग देखेंगे–

पुराना नियम, सुसमाचारों में प्रभु यीशु, और नये नियम में कलीसिया। हमारे सामने चुनौती यह है कि हम देखें कि उद्धार के इतिहास में इन तीनों युगों में विशेष बात या अद्वैत बात क्या है तदोपरान्त इन तीनों युगों में कौन सी बात लगातार चली आ रही है।

पुराना नियम और आत्मिक युद्ध

इस्राएल का परिवेश...

तो हम पुराना नियम और आत्मिक युद्ध से आरंभ करते हैं। आपको स्मरण रखना है कि पुराने नियम में इस्राएल के विरुद्ध तीन बड़े सामाज्य हैं– कनान, मिस्र और बेबीलोन। वे सब आभिचारिक धर्मों एवं व्यवहार का पालन करनेवाले थे। उनमें प्रेत आत्माओं, मूर्तियों और अन्य आत्माओं की पूजा की जाती थी। उनमें देवी–देवताओं का अंग में आना आदि सामान्य था। मेरे कहने का अर्थ है कि वे हर एक घटना को आत्माओं का प्रकोप या अनुग्रह मानते थे। बुराई को शान्त करने और आशिष पाने के लिए उन्हें आत्माओं को प्रसन्न करना होता था।

इस्राएली उनके इस आभिचार में रम गया था।

व्यवस्थाविवरण 32:16–17 में लिखा है, "उन्होंने पराए देवताओं को मानकर उसमें जलन उपजाई; और घृणित कर्म करके उसको रिस दिलाई। उन्होंने पिशाचों के लिये जो ईश्वर न थे बलि चढ़ाए, और उनके लिये वे अनजाने देवता थे, वे तो नये नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रकट हुए थे, और जिनसे उनके पुरखा कभी डरे नहीं।"

यहां दुष्टात्माओं की झूठे देवी–देवताओं और मूर्तियों से तुलना की गई है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप पुराने नियम में दुष्टात्माओं का उल्लेख नहीं देखेंगे। इसका अर्थ यह नहीं कि पुराना नियम दुष्टात्माओं को अनदेखा करता था। मैं चाहता हूं कि आप देखें कि संपूर्ण पुराने नियम में मूर्तिपूजा और झूठे देवी–देवता दुष्टात्माओं का काम है। पुराना नियम इस बात को विशेष रूप से प्रकट करता है।

यही आभिचार इस्राएल में प्रवेश कर गया था जिसका परिणाम था नैतिक पतन। वहां धार्मिक वैश्यावृति थी। व्यवस्थाविवरण 23:17–18, "इस्राएली स्त्रियों में से कोई देवदासी न हो, और न इस्राएलियों में से कोई पुरुष ऐसा बुरा काम करनेवाला हो। तू वेश्यापन की कमाई या कुत्ते की कमाई किसी मन्नत को पूरी करने के लिये अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न लाना; क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप ये दोनों की दोनों कमाई घृणित कर्म है।"

बच्चों को बलि चढ़ाना– भजन 106:34–39, "जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनको उन्होंने सत्यानाश न किया, वरन् उन्हीं जातियों से हिलमिल गए और उनके व्यवहारों को सीख लिया; और उनकी मूर्त्तियों की पूजा करने लगे, और वे उनके लिये फन्दा बन गईं। वरन् उन्होंने अपने बेटे–बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया; और अपने निर्दोष बेटे–बेटियों का लहू बहाया जिन्हें उन्होंने कनान की मूर्त्तियों पर बलि किया, इसलिये देश खून से अपवित्र हो गया। और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए, और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए।"

यह नैतिक पतन और शारीरिक विनाश का भयानक प्रदर्शन था। वे अपनी देह को काटते चीरते थे– **1** राजाओं 18:28, "और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार पुकार के अपनी रीति के अनुसार छुरियों और बर्छियों से अपने अपने को यहां तक घायल किया कि लहू लुहान हो गए।"

परमेश्वर ने उनका सर्वनाश किया–1 राजाओं 18:40, "एलिय्याह ने उनसे कहा, "बाल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी छूटने न पाए;" तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला।"

अतः हम पुराने नियम में दुष्टात्मा और स्वर्गदूत को ही नहीं देख रहे हैं। हम शैतानी या दुष्टात्मा के प्रभाव को देख रहे हैं जो मूर्तिपूजा और अनैतिकता से प्रकट है।

अलग–अलग संदर्भ...

यहां मैं छः संदर्भों पर ध्यान दूंगा। प्रत्येक संदर्भ आत्मिक युद्ध से संबन्धित है।

उत्पत्ति 3:1–15, में हम आत्मिक युद्ध के विषय अनेक बातें सोच सकते हैं–"यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; और उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना'?" स्त्री ने सर्प से कहा, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।" तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिये अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, "तू कहां है?" उसने कहा, "मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।" उसने कहा, "किसने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?" आदम ने कहा, "जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।" तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "तू ने यह क्या किया है?" स्त्री ने कहा, "सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैं ने खाया।" तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, "तू ने जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू पशुओं, और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित

है; तू पेट के बल चला करेगा, और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगाः और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

शैतान ने हव्वा को ललचाया और आदम भी इसमें सहभागी हुआ। वे परमेश्वर के समक्ष दोषी ठहरे। परमेश्वर के पूछने पर आदम हव्वा को दोष देता है और हव्वा सर्प को। परमेश्वर तीनों को श्राप देता है। परिणामस्वरूप वे अदन की वाटिका से बाहर किए जाते हैं। उत्पत्ति 3:1–24 का यह सारांश है।

उत्पत्ति 3 के आधार पर हमारे बैरी के स्वभाव पर ध्यान दें। आत्मिक युद्ध के परिप्रेक्ष्य में परमेश्वर सृजनहार है और शैतान सृजित प्राणी है। कुछ बातें हमें दोहरानी होंगी परन्तु मैं चाहता हूं कि ये पद स्वयं की व्याख्या करें। शैतान परमेश्वर द्वारा सृजित ही नहीं, उसके अधीन है। परमेश्वर परमप्रधान है और शैतान अधीनस्थ है। आत्मिक युद्ध के पहले ही चित्रण में हम स्पष्ट देख सकते हैं कि परमेश्वर का अधिकार क्या है और शैतान पर उसकी प्रभुता है। परमेश्वर परमप्रधान है और शैतान उसके अधीन है।

सांसारिक परिप्रेक्ष्य में आत्माएं आपस में युद्ध करती हैं। अच्छाई और बुराई में युद्ध होता है परन्तु बाइबल में ऐसा नहीं है। बाइबल में बुराई परमेश्वर के अधीन है। उत्पत्ति 3 में शैतान और परमेश्वर बराबर की शक्तियां नहीं हैं। शैतान परमेश्वर के अधीन है। शैतान परमेश्वर को लेखा देता है। शैतान को परमेश्वर श्राप देता है। हमारे बैरी का यह रूप है।

शैतान का चरित्र। उत्पत्ति 3 में शैतान बात करता है। वह चतुर है। वह मूर्ख नहीं है। वह जानता है कि कहां आक्रमण करे। उसने आदम की अपेक्षा हव्वा को अपना लक्ष्य बनाया था। वह बड़ा भोला बनकर हव्वा से प्रश्न करता है और हव्वा को बहकाता है कि वह आशिष पाएगी। मित्रों, जब वह आपको बहकाए तो उस पर विश्वास नहीं करना। वह बहुत चालाक है। वह अपना परिचय शैतान नाम से नहीं देगा। वह आपके घर में, आपके कार्यस्थल, आपके पड़ोस में, टी.वी. पर, आपके मित्रों में आपके लिए लालच उत्पन्न करेगा। क्योंकि वह जानता है कि यदि आप जान जाएंगे कि वह शैतान है तो उसकी बात नहीं मानेंगे।

वह परमेश्वर के चरित्र पर कीचड़ उछालता है। वह प्रभु परमेश्वर की अपेक्षा कवेल परमेश्वर कहता है। वह परमेश्वर की भलाई को परमेश्वर से अलग कर देता है। उत्पत्ति 3:1 में एक अत्यधिक दुर्बोध परिवर्तन है। शैतान परमेश्वर के वचन पर सन्देह उत्पन्न करता है, "क्या परमेश्वर ने ऐसा कहा?" शब्दों द्वारा ही

संसार में परीक्षा आई थी। बैरी संसार में हमारे चारों ओर ऐसा ही जाल बिछाए हुए है। क्या बाइबल का सत्य वास्तव में यही है? शैतान एक निन्दक, झूठा और हत्यारा है। आरंभ ही से उसकी यह परिभाषा है। वह झूठ बोलकर हत्या का लक्ष्य साधता है।

यह शैतान का स्वभाव है। अब हमारे आत्मिक युद्ध के विषय में क्या कहें? उत्पत्ति अध्याय 3 में हम देखते हैं कि मुख्य प्रश्न है, "हमारे मन में कौन राज करेगा?" शैतान या परमेश्वर? अतः आत्मिक युद्ध का युद्ध क्षेत्र आपका मन है। आप अपना मन किसे देंगे? आप किसकी बात सुनेंगे? हम किस पर विश्वास करेंगे और किसकी आज्ञा मानेंगे? परमेश्वर की अपेक्षा शैतान की बात मानना पाप है, दुष्टता है, अशुद्धता है। उस पर विश्वास न करें। उसकी बात न मानें। उसे अपने मन में राज करने न दें। यह हमारा आत्मिक युद्ध है।

पराजय का परिणामः पाप का परिणाम सांसारिक कष्ट है। स्त्री और पुरुष दोनों को श्राप देकर अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया गया था।

पाप का दण्ड अनन्त मृत्यु है। उन्हें जीवन के वृक्ष से दूर कर दिया गया था। जो सर्प की बात मानते हैं उन्हें उसके दांत चुभते हैं। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उत्पत्ति 3 को भली भांति समझें। इस अन्धकार के मध्य एक अति उत्तम प्रतिज्ञा है। हमारा उद्धार होगा।

2. 1 शमूएल 16:13–23: यहां भावी राजा दाऊद का अभिषेक किया जाता है अर्थात उस पर परमेश्वर का आत्मा आता है तो दूसरी ओर राजा शाऊल पर दुष्टात्मा आता है।

"तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामा को चला गया। यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। तब शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, "सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है। हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूंढ़ ले आएं; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।" शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, "अच्छा, एक उत्तम वीणा–वादक देखो, और उसे मेरे पास लाओ।" तब एक जवान ने उत्तर देके कहा, "सुन, मैं ने बैतलहमवासी यिशै के एक पुत्र को

देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है।" तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, "अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़–बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।" तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया। और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित रहने लगा। और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया। तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, "दाऊद को मेरे सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं।" और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था।"

यहां निरंकुश निष्कर्ष न निकालें कि अच्छा संगीत बजाने से दुष्टात्मा निकल जाती है। यहां चार बार कहा गया है कि परमेश्वर की ओर से बुरी आत्मा शाऊल पर आई पद 14, 15, 16, 23। इसका क्या अर्थ है। परमेश्वर ने दुष्टात्मा को शाऊल पर आने दी। परमेश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया?

वह शाऊल को दण्ड दे रहा था। यह उसके पाप का परिणाम था। 1 शमूएल 15:23 में शमूएल शाऊल के विद्रोह के संबन्ध में इसकी चर्चा करता है– भूतसिद्धी का पाप उसका विद्रोह था। उसका हठीलापन मूर्तिपूजा के स्वरूप था। "देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।"

1 शमूएल 16 में परमेश्वर शाऊल को दण्ड दे रहा था परन्तु दाऊद को उभार रहा था और दाऊद को अनुमति दे रहा था कि वह शाऊल को शान्ति दिलाए।

यहां दो महत्वपूर्ण शिक्षाएं हैं: (i) दुष्टता की शक्तियां परमेश्वर से कम हैं। यहां भी दुष्टात्माएं परमेश्वर की अनुमति से ही काम कर रही है। वे परमेश्वर के अधीन हैं। पीड़ा देनेवाली आत्मा उसके पाप का परिणाम था। यह शाऊल के जीवन में पाप के दण्ड की कहानी है। दुष्टात्मा उससे पाप नहीं करवा रही थी। वह उसके पाप के कारण उस पर आई थी।

1 शमूएल 28:3–25, यह आभिचारी जीवन का वर्णन है। शाऊल ने दश से सब प्रकार की भूतसिद्धि समाप्त कर दी थी परन्तु अन्त में वह स्वयं ही उसके पास जाता है और शमूएल की आत्मा को बुलवाता है। शमूएल की आत्मा उसे उसके पापों और भूसिद्धि के लिए परमेश्वर का दण्ड सुनाती है।

"शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामा में मिट्टी दी थी। शाऊल ने ओझों और भूत–सिद्धि करनेवालों को देश से निकाल दिया था। जब पलिश्ती इकट्ठे हुए, और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली। पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो कांप उठा। जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा। तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, "मेरे लिये किसी भूत–सिद्धि करनेवाली को ढूंढ़ो, कि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूं।" उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, "एन्दोर में एक भूत–सिद्धि करनेवाली रहती है।" तब शाऊल ने अपना भेष बदला और दूसरे कपड़े पहिनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातोंरात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, "अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूंगा उसे बुलवा दे।" स्त्री ने उससे कहा, "तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओझों और भूत–सिद्धि करनेवालों को देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।" शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।" स्त्री ने पूछा, "मैं तेरे लिये किस को बुलाऊं?" उसने कहा, "शमूएल को मेरे लिये बुला।" जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, "तू ने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल है।" राजा ने उससे कहा, "मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?" स्त्री ने शाऊल से कहा, "मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है।" उसने उससे पूछा, "उसका कैसा रूप है?" उसने कहा, "एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है।" तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिरके दण्डवत् किया। शमूएल ने शाऊल से पूछा, "तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है?" शाऊल ने कहा, "मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं।" शमूएल ने कहा, "जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझ से क्यों पूछता है? यहोवा ने तो जैसे मुझ से कहलवाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है; अर्थात् उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है। तू ने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया।

फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।" तब शाऊल तुरन्त मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया; उसने पूरे दिन और रात भोजन न किया था, इससे उसमें बल कुछ भी न रहा। तब वह स्त्री शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल देखकर उसने कहा, "सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और मैं ने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तू ने मुझ से कहा। तो अब तू भी अपनी दासी की बात मान; और मैं तेरे सामने एक टुकड़ा रोटी रखूं; तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग ले तब तुझे बल आ जाए।" उसने इनकार करके कहा, "मैं न खाऊंगा।" परन्तु उसके सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहां तक उसे दबाया कि वह उनकी बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया। स्त्री के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उसने फुर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर गूंधा, और अखमीरी रोटी बनाकर शाऊल और उसके सेवकों के आगे लाई; और उन्होंने खाया। तब वे उठकर उसी रात चले गए।"

यहां अनेक शिक्षाएं हैं परन्तु मैं चाहता हूं कि आत्मिक युद्ध के संदर्भ में आप देखें: परमेश्वर की प्रभुता सब बुराइयों पर है। परमेश्वर सब अपने नियन्त्रण में रखता है। परमेश्वर भूतसिद्धि को अनदेखा नहीं करता है परन्तु वह सब उसके नियन्त्रण में है। अपने अध्ययन के अन्तिम भाग में हम परमेश्वर और बुराई के विषय में देखेंगे परन्तु सब वर्जित एवं घृणित बातें भी परमेश्वर के प्रभुत्व के अधीन है।

(ii) परमेश्वर की प्रभुता सब आत्मिक बुराईयों पर है। परमेश्वर का क्रोध सब मानवीय विद्रोह पर पड़ता है। विद्रोह और भूतसिद्धि के कारण परमेश्वर ने शाऊल को मार डाला– 1 इतिहास 10:13–14, "यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था; क्योंकि उसने यहोवा का वचन टाल दिया था, फिर उसने भूतसिद्धि करनेवाली से पूछकर सम्मति ली थी। उसने यहोवा से न पूछा था, इसलिये यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै के पुत्र दाऊद को दे दिया।"

पुराना नियम और आत्मिक युद्ध

अलग–अलग लेख

मैं चाहता हूं कि आप घर जाकर इन्हें पढ़ें। ये आपके लिए चुनौतियां हैं। इनके बाद हम सुसमाचार में प्रभु यीशु और नये नियम में कलीसिया के संदर्भ में आत्मिक युद्ध देखेंगे।

1 राजाओं 22:6–28, "तब इस्राएल के राजा ने नबियों को जो कोई चार सौ पुरुष थे इकट्ठा करके उनसे पूछा, "क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करूं, या रुका रहूं?" उन्होंने उत्तर दिया, "चढ़ाई करः क्योंकि प्रभु उसको राजा के हाथ में कर देगा। परन्तु यहोशापात ने पूछा, "क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिससे हम पूछ लें?" इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "हां, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उससे घृणा रखता हूं, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं वरन् हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है। यहोशापात ने कहा, "राजा ऐसा न कहे।" तब इस्राएल के राजा ने एक हाकिम को बुलवा कर कहा, "यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ।" इस्राएल का राजा और यहूदा का राजा यहोशापात, अपने अपने राजवस्त्र पहिने हुए शोमरोन के फाटक में एक खुले स्थान में अपने अपने सिंहासन पर विराजमान थे और सब भविष्यद्वक्ता उनके सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे। तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनाकर कहा, "यहोवा यों कहता है, 'इनसे तू अरामियों को मारते मारते नष्ट कर डालेगा।'" और सब नबियों ने इसी आशय की भविष्यद्वाणी करके कहा, "गिलाद के रामोत पर चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; क्योंकि यहोवा उसे राजा के हाथ में कर देगा।" जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उसने उससे कहा, "सुन, भविष्यद्वक्ता एक ही मुंह से राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं तो तेरी बातें उनकी सी हों; तू भी शुभ वचन कहना।" मीकायाह ने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूंगा।" जब वह राजा के पास आया, तब राजा ने उससे पूछा, "हे मीकायाह! क्या हम गिलाद के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई करें या रुके रहें? उसने उसको उत्तर दिया, "हां, चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो; और यहोवा उसको राजा के हाथ में कर दे।" राजा ने उससे कहा, "मुझे कितनी बार तुझे शपथ धराकर चिताना होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह।" मीकायाह ने कहा, "मुझे समस्त इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़–बकरियों के समान पहाड़ों पर; तित्तर बित्तर देख पड़ा, और यहोवा का यह वचन आया, 'वे तो अनाथ हैं; अतएव वे अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएं।" तब इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं हानि ही की भविष्यद्वाणी करेगा।" मीकायाह ने कहा, "इस कारण तू यहोवा का यह वचन सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके पास दाहिने बांयें खड़ी हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी है। तब यहोवा ने पूछा, 'अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके खेत आए?' तब किसी ने कुछ, और किसी ने कुछ कहा। अन्त में एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी, 'मैं उसको बहकाऊंगी': यहोवा ने पूछा, 'किस उपाय से?' उसने कहा, 'मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में पैठकर उनसे झूठ बुलवाऊंगी।' यहोवा ने कहा, 'तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर।' तो अब सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं

के मुंह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है।" तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने मीकायाह के निकट जा, उसके गाल पर थप्पड़ मार कर पूछा, "यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तूझ से बातें करने को किधर गया?" मीकायाह ने कहा, "जिस दिन तू छिपने के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब तूझे ज्ञात होगा।" तब इस्राएल के राजा ने कहा, "मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और योआश राजकुमार के पास ले जा; और उनसे कह, 'राजा यों कहता है कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दुःख की रोटी और पानी दिया करो।'" और मीकायाह ने कहा, "यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा।" फिर उसने कहा, "हे लोगो तुम सब के सब सुन लो।"

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं में झूठ बोलनेवाली आत्मा जाने दी कि राजा आहाब का विनाश हो। पवित्र परमेश्वर दुष्टात्मा को दण्ड का साधन बनाता है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। 1 राजाओं 16 में अहाब ने परमेश्वर को बहुत क्रोध दिलाया था। वह सब इस्राएली राजाओं से अधिक पाप करता था। जैसा हमने देखा था– 1 राजाओं 18 में कि परमेश्वर झूठे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा अन्यजाति राजा पर दण्ड लाया। पवित्र परमेश्वर दुष्टात्मा को अपने उद्देश्य के निमित्त साधन बनाता है।

अय्यूब 1:6–2:10: स्वर्ग में परमेश्वर और शैतान में बात हो रही है। फिर शैतान उसका सत्यानाश करता है। उसकी फसल, उसकी भूमि, उसकी सम्पत्ति, उसके बच्चे सब नष्ट हो जाता है। अध्याय 2 में शैतान परमेश्वर से अनुमति लेकर उसको शारीरिक पीड़ा देता है। यहां परमेश्वर और शैतान के वार्तालाप से हम आत्मिक युद्ध के विषय में क्या देखते हैं?

अय्यूब 1:6–2:10, "एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहां से आता है?" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "पृथ्वी पर इधर–उधर घूमते–फिरते और डोलते–डालते आया हूं।" यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बांधा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।" यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।" तब

शैतान यहोवा के सामने से चला गया। एक दिन अय्यूब के बेटे–बेटियां बड़े भाई के घर में खा रहे और दाखमधु पी रहे थे; तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा, "हम तो बैलों से हल जोत रहे थे, और गदहियां उनके पास चर रही थीं कि शबा के लोग धावा करके उनको ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं। वह अभी यह कह ही रहा था कि दूसरा भी आकर कहने लगा, "परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उस से भेड़–बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।" वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, "कसदी लोग तीन गोल बांधकर ऊंटों पर धावा करके उन्हें ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।" वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, तेरे बेट–बेटियां बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।" तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा, "मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया। फिर एक और दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी उसके सामने उपस्थित हुआ। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहां से आता है?" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "इधर–उधर घूमते–फिरते और डोलते–डालते आया हूं।" यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है? और यद्यपि तू ने मुझे बिना कारण उसका सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।" यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।" तब शैतान यहोवा के सामने से निकला, और अय्यूब को पांव के तलवे से ले सिर की चोटी तक बड़े बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। तब अय्यूब खुजलाने के लिये एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। तब उसकी स्त्री उससे कहने लगी, "क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।" उसने उससे कहा, "तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुःख न लें?" इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।"

यहां फिर वही मुख्य बात है। परमेश्वर की प्रभुता का सत्य! शैतान परमेश्वर की अनुमति से ही बोलता है और काम करता है। वह परमेश्वर के उद्देश्यपूर्ति हेतु ही काम करता है। परमेश्वर इस प्रकार अय्यूब को अंगीकार के उस स्थान पर लाया जहां वह कहता है, "मेरे कानों ने तो सुना था परन्तु अब आंखों ने भी देख लिया है।" शैतान के कर्मों के कारण अय्यूब को परमेश्वर की महानता का बोध हुआ। शैतान ने परमेश्वर की अनुमति से काम किया और अन्त में परमेश्वर का उद्देश्य ही पूरा किया।

यहां विजय अय्यूब की नैतिकता की थी। प्रश्न यह था, क्या अय्यूब परमेश्वर को कोसेगा? शैतान का दावा था कि वह परमेश्वर को कोसेगा परन्तु शैतान द्वारा प्रेरित किए जाने के बाद अय्यूब परमेश्वर का गुणगान ही करता है। आप देखेंगे कि अय्यूब न तो शैतान का नाम लेता है न आपदा का उल्लेख करता है, न अपनी पत्नी के व्यवहार की चर्चा करता है। वह परमेश्वर से विवाद करता है क्योंकि वह जानता है कि परमेश्वर ही सब कुछ है। इसलिए वह कहता है कि हम परमेश्वर से जब भलाई और सुख पाते हैं तो हम परमेश्वर से कष्ट क्यों न पाएं? यह आत्मिक युद्ध का परमेश्वर केन्द्रित दृष्टिकोण है। अय्यूब परमेश्वर का महिमान्वन करता है और अय्यूब शैतान को लज्जित करता है।

आप भी किसी न किसी कष्ट या परेशानी में होंगे। मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूं कि कष्ट केवल स्वार्गिक दृष्टिकोण से भली भांति समझ में आते हैं। अय्यूब को परमेश्वर और शैतान के मध्य होनेवाले वार्तालाप के विषय कुछ नहीं मालूम था। हम तो इस पुस्तक को पढ़कर समझ सकते हैं कि हमारे साथ क्या होता है और क्यों होता है परन्तु अय्यूब को कुछ नहीं मालूम था। अतः कष्टों के बारे में उसकी समझ बहुत सीमित थी।

हमारे लिए कष्ट दुर्बोध नहीं है क्योंकि हम जानते हैं कि यह परीक्षा है और अय्यूब की परीक्षा की जा रही है परन्तु ईश्वरीय परिदृश्य से न चूकें। परमेश्वर के सामने 1,00,000 स्वर्गदूत हैं और शैतान आकर कहता है कि अय्यूब केवल अपने लाभ के लिए परमेश्वर की आराधना करता है परन्तु परमेश्वर उससे कहता है, "तू उसका सब कुछ छीन कर देख ले, उसका स्वास्थ भी छीन ले, वह फिर भी मेरी आराधना करेगा।" शैतान उसका सब कुछ छीन कर उसकी बुरी दुर्दशा कर देता है और स्वर्गदूत स्वर्ग से देख रहे हैं कि अय्यूब की प्रतिक्रिया क्या होगी। क्या अय्यूब परमेश्वर को कोसेगा? अय्यूब वास्तविकता से अनभिज्ञ कहता है, "परमेश्वर ने दिया, और परमेश्वर ने ले लिया। परमेश्वर का नाम धन्य हो।" स्वर्ग में 2,00,000 हाथ उठते हैं और वे कहते हैं, "अय्यूब का परमेश्वर धन्य है।" शैतान लज्जित होता है और 1,00,000 आवाज़े परमेश्वर की स्तुति करती हैं।

स्वर्ग का यह दृष्टिकोण हमारे सांसारिक दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न है। अय्यूब परमेश्वर का नाम ऊंचा करता है और शैतान लज्जित होता है।

जकर्याह 3: यहोशू महायाजक यहूदा का प्रतिनिधित्व करता हुआ परमेश्वर के समक्ष खड़ा है और शैतान उस पर दोष लगा रहा है। परमेश्वर अपनी प्रजा का शोधन कर रहा है, उनका दोषभार्जन कर रहा है और उन्हें अपनी धार्मिकता दे रहा है। इस गद्यांश के अन्त में आप मसीह की अनुपम प्रतिज्ञा देखते हैं– परमेश्वर का सेवक, दाऊद का वंशज, प्रतिज्ञा का मसीहा! शैतान सीमित है।

"फिर उसने यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के सामने खड़ा हुआ मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दाहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा था। तब यहोवा ने शैतान से कहा, "हे शैतान, यहोवा तुझ को घुड़के! यहोवा जो यरूशलेम को अपना लेता है, वही तुझे घुड़के! क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है?" उस समय यहोशू तो दूत के सामने मैला वस्त्र पहिने हुए खड़ा था। तब दूत ने उनसे जो सामने खड़े थे कहा, "इसके ये मैले वस्त्र उतारो।" फिर उसने उससे कहा, "देख, मैं ने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं।" तब मैं ने कहा, "इसके सिर पर एक शुद्ध पगड़ी रखी जाए।" अतः उन्होंने उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगड़ी रखी, और उसको वस्त्र पहिनाए; उस समय यहोवा का दूत पास खड़ा रहा। तब यहोवा के दूत ने यहोशू को चिताकर कहा, "सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता हैः यदि तू मेरे मार्गों पर चले, और जो कुछ मैं ने तुझे सौंप दिया है उसकी रक्षा करे, तो तू मेरे भवन का न्यायी और मेरे आंगनों का रक्षक होगा; और मैं तुझ को इनके बीच में आने जाने दूंगा जो पास खड़े हैं। हे यहोशू महायाजक, तू सुन ले, और तेरे भाईबन्धु जो तेरे सामने खड़े हैं वे भी सुनें, क्योंकि वे मनुष्य शुभ शकुन हैंः सुनो, मैं अपने दास शाख को प्रगट करूंगा। उस पत्थर को देख जिसे मैं ने यहोशू के आगे रखा है, उस एक ही पत्थर के ऊपर सात आंखें बनी हैं, सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, देख मैं उस पत्थर पर खोद देता हूं, और इस देश के अधर्म को एक ही दिन में दूर कर दूंगा। उसी दिन तुम अपने अपने भाईबन्धुओं को दाखलता और अंजीर के वृक्ष के नीचे आने के लिये बुलाओगे, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।"

देखिए शैतान को बोलने की अनुमति भी नहीं है। वह दोष लगाना चाहता है परन्तु उसे अवसर प्राप्त नहीं है। यहूदा की प्रजा को पापों की क्षमा की आवश्यकता थी। वे पाप के उत्तरदायी थे। उन्हें पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की आवश्यकता थी और परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से यह किया।

दानिय्येल की पुस्तक दुष्टात्माओं और स्वर्गदूतों के संबन्ध में बहुत कुछ दर्शाती है। दानिय्येल सोच रहा था कि इस्राएली स्वदेश क्यों नहीं लौट पा रहे हैं। अतः वह उपवास रखकर प्रार्थना करने लगा। तब एक स्वर्गदूत उसके पास आया। वह दानिय्येल की प्रार्थना के पहले ही दिन चल पड़ा था परन्तु दुष्टात्मा ने उसे रोका परन्तु मीकाईल के आने पर वह स्वतंत्र होकर आया है। और वह भविष्य में यूनान के विषय चर्चा करता है। यह आत्मिक युद्ध का एक अद्‌भुत वर्णन है।

दानिय्येल 10:12–14, "फिर उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने–बूझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं। फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा, और जब मैं तुझे समझाने आया हूं, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।"

दानिय्येल 10 आत्मिक युद्ध का परिदृश्य है। दानिय्येल ने प्रार्थना करना नहीं छोड़ा और जयवन्त हुआ। इससे आप प्रार्थना में घुटने टेक देंगे। जब हम परमेश्वर के समक्ष गंभीरता से प्रार्थना करते हैं तब क्या होता है, यहां स्पष्ट किया गया है।

ये पुराने नियम के सात अंश हैं जिनके दो अवलोकन हैं और तीन निष्कर्ष तथा एक प्रश्न है।

रोचक अवलोकन...

(I) मैं दो अति रोचक अवलोकन आपके सामने रखना चाहता हूं। ये आश्चर्यजनक हैं विशेष करके जब आप विचार करें कि पुराने नियम में इस्राएल के परिवेश की संस्कृतियों में हर घटना को आत्मिक संदर्भ में माना जाता था। आत्माओं की चर्चा वहां सामान्य बात थी। परन्तु पुराने नियम में शैतान और आत्माओं की चर्चा कम से कम है अर्थात उसमें हर जगह शैतान और आत्माओं की चर्चा नहीं है। पुराने नियम में इस्राएल की पड़ोसी जातियों का आभिचार व्यक्त नहीं है। उसमें आत्माओं का उल्लेख नहीं है। दूसरे शब्दों में, पुराने नियम में शैतान की आत्माओं की और परमेश्वर की परिभाषा ही भिन्न है। अतः पुराने नियम का केन्द्र इस्राएल के परिवेश की अन्यजातियों के अनुरूप नहीं हैं।

ऐसा नहीं है कि उस समय दुष्टात्माएं काम नहीं करती थीं परन्तु पुराना नियम उन पर कम ध्यान देकर मनुष्य के उत्तरदायित्व पर अधिक ध्यान देता है। पुराने नियम में आप दुष्टात्मा का किसी में प्रवेश नहीं देखते हैं। पुराने नियम में आप यह नहीं सुनेंगे कि नूह पर शराब की दुष्टात्मा आ गई थी या दाऊद पर व्यभिचार की दुष्टात्मा या मूसा पर अविश्वास की दुष्टात्मा या इस्राएल में मूर्तिपूजा की दुष्टात्मा थी। समस्या मनुष्य के मन की है दुष्टात्माओं की नहीं। पुराने नियम में मनुष्य के उत्तरदायित्व पर अधिक बल दिया गया है। बुराई को आत्माओं की अपेक्षा मनुष्य के मन से जोड़ा गया है जैसा उत्पत्ति 6 में दर्शाया गया है– उत्पत्ति 6:5, "यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है।"

सभोपदेशक 9:3 हमारे मन की दुष्टता का अति उचित विवरण है, "जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में यह एक दोष है कि सब लोगों की एक सी दशा होती है; और मनुष्यों के मनों में बुराई भरी हुई है, और जब तक वे जीवित रहते हैं उनके मन में बावलापन रहता है, और उसके बाद वे मरे हुओं में जा मिलते हैं।"

यिर्मयाह कहता है– यिर्मयाह 17:9, "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोख देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?"

इस तथ्य को थाम लें यह बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है?

पुराने नियम से निष्कर्ष...

(1) परमेश्वर शैतान पर भी प्रभुता करता है। शैतान में असीम बुराई है–झूठा, विनाशक, दोष लगानेवाला, हत्यारा। शैतान की शक्तियां सीमित हैं। किसी लेखक ने कहा है, वह जो सब जातियों को बुराई और मृत्यु के अन्धकार में बान्ध कर रखता है वह परमेश्वर के पवित्र प्रेम और क्रोध की व्यापक कहानी का गौण नायक है।

शैतान नहीं, परमेश्वर प्रकृति पर, सब जातियों पर, जीवन, मृत्यु, रोग तथा सब बातों पर प्रभुता संपन्न है। शैतान कैंसर पर प्रभुता नहीं करता है। शैतान हमारे जीवन, मृत्यु पर प्रभुता नहीं करता है। याकूब कहता है कि यदि परमेश्वर चाहेगा तो हम जीएंगे, नहीं चाहेगा तो हम मर जाएंगे।

(ii) पाप मनुष्य की मुख्य समस्या है। हम ही अपने पाप के उत्तरदायी हैं। पुराना नियम बुराई का दोष शैतान को नहीं देता है। उत्पत्ति 3 में कौन दोषी था? आदम और हव्वा। शाऊल की कहानी में कौन दोषी है? शाऊल। अहाब भी पाप का दोषी था।

पुराना नियम शिक्षा देता है कि हमें पाप के प्रकाश में परमेश्वर को प्रतिक्रिया दिखाना है। पुराने नियम में हम बार–बार यही देखते हैं कि या तो हम पापों से मन फिराएं या पापों में मर जाएं। परमेश्वर बार बार यही कहता है। आप मूर्तिपूजा के संबन्ध में क्या करेंगे? आप व्यभिचार के विषय में क्या करेंगे? आप झूठ, चोरी, धोखाधड़ी के बारे में क्या करेंगे? पुराने नियम में सबका एक ही उत्तर है, मन फिराओ! परमेश्वर के पास आओ। परमेश्वर में विश्वास करो, परमेश्वर का अनुसरण करो, परमेश्वर की आज्ञाएं मानों।

पुराने नियम में दुष्टात्माएं नहीं हैं न ही वहां किसी में से दुष्टात्मा निकाली गई थी। वहां पापी मनुष्य को मन फिराने और परमेश्वर में विश्वास करने की पुकार है। पुराने नियम का यही आत्मिक युद्ध है जो परमेश्वर केन्द्रित है न कि दुष्टात्मा केन्द्रित। पुराने नियम में परमेश्वर केन्द्र में है, शैतान की भूमिका मुख्य नहीं है।

अब एक प्रश्न उठता है, "यदि परमेश्वर बुराई पर प्रभुता करता है और दुष्टात्माओं को अपने दण्ड का साधन बनाता है कि उसका उद्देश्य पूरा हो तो पवित्र परमेश्वर बुराई से कैसे संबन्ध बनाता है?" यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। अब आपके लिए चुनौती यह है कि मैं जो कह रहा हूं उसे समझें क्योंकि हम पुराने नियम की गहन थियोलॉजी और शिक्षाओं पर विचार करेंगे।

परमेश्वर नाना प्रकार से पाप के साथ व्यवहार करता है। अर्थात वह पाप के साथ तरह तरह से और अलग अलग समय पर व्यवहार करता है। पुराने नियम में परमेश्वर पाप को रोकता है। हम सब उदाहरणों को नहीं देखेंगे। परन्तु उत्पत्ति 20:6 में लिखा है, "परमेश्वर ने उससे स्वप्न में कहा, "हां, मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है, और मैं ने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरुद्ध पाप न करे; इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया।"

कभी कभी परमेश्वर पाप पर रोक लगा देता है– भजन 19:13, "तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं! तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा।"

परमेश्वर पाप होने भी देता है– भजन 81:11–12, "परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी; इस्राएल ने मुझ को न चाहा। इसलिये मैं ने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले।"

पुराने नियम में परमेश्वर मनुष्य को पाप के लिए छोड़ भी देता है। हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर पाप को भलाई के निमित्त होने भी देता है– उत्पत्ति 50:19–20, "यूसुफ ने उनसे कहा, "मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।"

इस कहानी को हम आगे चलकर देखेंगे।

कभी परमेश्वर बुराई पर पूरी रोक नहीं लगाता है– अय्यूब 1:12, "यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।" तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर नाना प्रकार से पाप के साथ व्यवहार करता है परन्तु परमेश्वर पाप नहीं करवाता है। यह महत्वपूर्ण है। धर्मशास्त्र में न तो परमेश्वर ने पाप करवाया और न ही पाप का दोष कभी परमेश्वर पर आया है। परमेश्वर किसी को पाप का लालच नहीं देता है। पाप पर प्रभुता करके भी वह अपनी पवित्रता में सिद्ध है। पाप के साथ व्यवहार करने में उसकी पवित्रता और भलाई पर कोई दोष नहीं, प्रश्न ही नहीं उठता है।

यहां हमें अत्यधिक सावधान रहना है अन्यथा हम भ्रम में पड़ जाएंगे कि परमेश्वर बुराई का साथ देता है। इस प्रकार तो हम इन्कार करते हैं परमेश्वर धर्मी और भला है जो हमारी आराधना के योग्य है। धर्मशास्त्र ऐसी शिक्षा नहीं देता है। अब यदि हम कहें कि परमेश्वर सब पर प्रभुता नहीं करता है तो इसका

अर्थ है कि कुछ बातें परमेश्वर के वश में नहीं परन्तु धर्मशास्त्र की यह शिक्षा नहीं है। अतः इन दोनों भ्रांतियों से सावधान रहें। परमेश्वर पाप नहीं करवाता है तो फिर हम परमेश्वर के साथ बुराई का निर्वाह कैसे करें?

परमेश्वर पाप के साथ व्यवहार करता है। यह तो हमने देखा। परमेश्वर अच्छे और बुरे के साथ अलग अलग व्यवहार करता है। सब भलाई परमेश्वर के अधीन है। परमेश्वर पूर्णरूपेण भला एवं अच्छा है– भजन 107:1, "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है।"

यहेजकेल 33:11, "इसलिये तू उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी हैः मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न नहीं होता, परन्तु इससे कि दुष्ट अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे; हे इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे मार्ग से फिर जाओ; तुम क्यों मरो?"

विलापगीत 3:31–33, "क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतारे नहीं रहता, चाहे वह दुःख भी दे, तौभी अपनी करुणा की बहुतायत के कारण वह दया भी करता है; क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दुःख देता है।"

मैं इस सत्य को स्वीकार करके कहता हूं कि सब भलाई परमेश्वर की है– व्यवस्थाविवरण 3:24, "हे प्रभु यहोवा, तू अपने दास को अपनी महिमा और बलवन्त हाथ दिखाने लगा है; स्वर्ग में और पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से काम और पराक्रम के कर्म कर सके?"

धर्मशास्त्र में कहीं भी अच्छाई प्राणी से संबन्धित नहीं है, उसका श्रेय सृजनहार को ही जाता है। यही मुख्य बात है।

नये नियम में देखिए रोमियों 3:9–20, "तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। जैसा लिखा है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। उनका गला खुली हुई कब्र है, उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है, उनके होठों में सापों का विष है। उनका मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पांव लहू बहाने को फुर्तीले हैं, उनके मार्गों में नाश और क्लेश है, उन्होंने

कुशल का मार्ग नहीं जाना। उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं।" हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं; इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे; क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।"

संपूर्ण अच्छाई परमेश्वर से है। अच्छाई के विषय परमेश्वर प्रथम है और मनुष्य बाद में है। विलापगीत स्पष्ट करता है कि हर एक अच्छाई और हर एक बुराई परमेश्वर के अधीन है। निर्गमन में फिरौन ने तो अपना मन कठोर किया परन्तु लिखा है कि परमेश्वर ने उसका मन कठोर किया था– निर्गमन 4:21–23, "तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जब तू मिस्र में पहुंचे तब ध्यान रहे कि जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किए हैं उन सभों को फ़िरौन को दिखलाना; परन्तु मै उसके मन को हठीला करूंगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। और तू फ़िरौन से कहना, 'यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन् मेरा जेठा है, और मैं जो तुझ से कह चुका हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे; और तू ने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन् तेरे जेठे को घात करूंगा'।"

संपूर्ण धर्मशास्त्र में इसके उदाहरण हैं

यहोशू 11:20, "क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दया न करे; वरन् सत्यानाश कर डाले, इस कारण उसने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्राएलियों का सामना करके उनसे युद्ध किया।"

1 शमूएल 2:25, "यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो परमेश्वर उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन विनती करेगा? तौभी उन्होंने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।"

अय्यूब 1:20–22, "तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा, "मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।"

यशायाह 45:7, "मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं।"

इन सब संदर्भों से प्रकट है कि सब बुराई परमेश्वर के अधीन है। परन्तु यहां एक अन्तर है, संपूर्ण अच्छाई परमेश्वर की है और बुराई परमेश्वर से नहीं है। कहने का अर्थ है कि धर्मशास्त्र में बुराई का दोष परमेश्वर का नहीं है, उसके कारण कुछ और ही है। प्राणी ही बुराई का दोषी है– यशायाह 66:3–4, "बैल का बलि करनेवाला मनुष्य के मार डालनेवाले के समान है; जो भेड़ का चढ़ानेवाला है वह उसके समान है जो कुत्ते का गला काटता है; जो अन्नबलि चढ़ाता है वह मानो सूअर का लहू चढ़ानेवाले के समान है; और जो लोबान जलाता है, वह उसके समान है जो मूरत को धन्य कहता है। इन सभों ने अपना अपना मार्ग चुन लिया है, और घिनौनी वस्तुओं से उनके मन प्रसन्न होते हैं। इसलिये मैं भी उनके लिये दुःख की बातें निकालूंगा, और जिन बातों से वे डरते हैं उन्हीं को उन पर लाऊंगा; क्योंकि जब मैं ने उन्हें बुलाया, तब कोई न बोला, और जब मैं ने उन से बातें की, तब उन्होंने मेरी न सुनी; परन्तु जो मेरी दृष्टि में बुरा था वही वे करते रहे, और जिस से मैं अप्रसन्न होता था उसी को उन्होंने अपनाया।"

बुराई परमेश्वर से नहीं मनुष्य या शैतान से मानी गई है।

यहां हमारे सामने सुसमाचार के अटल सत्यों में से एक है। परमेश्वर पूर्णरूपेण भला है। हम पाप करके उसके विद्रोही हो गए हैं। हम में कोई अच्छाई नहीं है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर की ओर फिरने के लिए भी हमें परमेश्वर की भलाई की आवश्यकता है। अब समस्या यह है कि परमेश्वर के हाथ में संपूर्ण नियन्त्रण है और हमें चुनाव करने की स्वतंत्रता है। ये दोनों बातें सच हैं। उदाहरणार्थ यूसुफ के भाइयों का व्यवहार–उत्पत्ति 50:19–20, "यूसुफ ने उनसे कहा, "मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूं? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।"

क्या यूसुफ के भाइयों ने पाप किया था? जी हां, क्या यह परमेश्वर के नियन्त्रण में था? निश्चय ही। परमेश्वर आनेवाले अकाल में उनके लिए प्रबन्ध की व्यवस्था कर रहा था। नियन्त्रण तो परमेश्वर के ही हाथ में है परन्तु चुनाव हम करते हैं।

यह विचार प्रेरितों के काम की पुस्तक में बहुत अच्छी तरह व्यक्त किया गया है– प्रेरितों के काम 2:22–24, "हे इस्राएलियो, ये बातें सुनोः कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजन और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।"

क्या प्रभु यीशु के सतानेवाले और क्रूस पर चढ़ानेवाले उसकी हत्या के दोषी थे? निश्चय ही। क्या उन्होंने उसकी हत्या करने का चुनाव किया था? जी हां। क्या परमेश्वर इसका नियन्त्रण कर रहा था। जी हां, एक एक गतिविधि का। यह परमेश्वर का उद्देश्य और पूर्वज्ञान था कि मानवीय इतिहास में हमारे उद्धार के लिए सबसे अधिक निर्दयता का प्रदर्शन करे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि परमेश्वर अच्छाई और बुराई दोनों पर प्रभुता करता है परन्तु पाप कभी नहीं करता। यह पुराने नियम में आत्मिक युद्ध का वर्णन है। परमेश्वर पूर्ण प्रभुता संपन्न है और मनुष्य पूर्ण उत्तरदायी है। वहां ध्यान केन्द्र शैतान और दुष्टात्मा निकालना नहीं है। वहां ध्यान केन्द्र मन फिराव और परमेश्वर की ओर फिरना है और यह आपका उत्तरदायित्व है। हर एक घटना परमेश्वर के अधीन घटती है। वह बुराई को भी भलाई के निमित्त काम में लेता है। यह पुराने नियम का आत्मिक युद्ध है। आप इस पर विचार करें।